अर्द्धवार्षिक परीक्षा 2016-2017

हिन्दी

कक्षा : XII

समय : 3 घंटे 15 मिनट **पूर्णांक : 100**

हिन्दी भाषा

1. किसी एक विषय पर लगभग 400/450 शब्दों में एक निबन्ध अथवा कहानी लिखिए : **[20]**

(i) 'सफलता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त अवसर की आवश्यकता होती है न कि कठिन परिश्रम की' – इस कथन के आधार पर अपने जीवन की किसी घटना का वर्णन कीजिए।

(ii) विद्यार्थियों में नकल करने की दुष्प्रवृत्ति बढ़ रही है, इसके कारणों का उल्लेख करते हुए इसके निदान सम्बन्धी अपने सुझाव दीजिए।

(iii) क्या अध्यापन के दौरान छात्रों को उनकी बौद्धिक क्षमता के आधार पर कक्षाओं में बाँटा जाना उचित है ? आपकी दृष्टि में यह कहाँ तक उचित है ?

(iv) एक ऐसी भयावह घटना का वर्णन कीजिए, जिसे याद करके आज भी आपके रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

(v) एक मौलिक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो :-

'नर हो न निराश करो मन को'

या

'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' ।

प्र.2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए एवं दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए :-

कबीर के समय में समाज में बड़ा अन्तर्कलह और संघर्ष था। हिन्दू-मुसलमानों में तो परस्पर सीधा संघर्ष था ही, हिन्दुओं में शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन आदि परस्पर वैमनस्य और विरोध रखते हैं। लोगों में परस्पर के स्नेह भाव का लोप हो गया था। ऐसे समय में दुर्दान्त परिस्थितियों में सात्विक साहस के साथ कबीर ने आपसी कलह और द्वेष की दूरियों को दूर करके पारस्परिक सौहार्द और बन्धुत्व के सम्बन्धों का प्रसार करना चाहा और उन्हें इनमें सफलता मिली। राजनीतिक दृष्टि से मुसलमान आक्रमणकारी अपनी विजय के मद में हिन्दुओं पर अत्याचार कर रहे थे। अतः सर्वत्र अशान्ति का बोलबाला था। हिन्दू अपने धर्म की उच्चता पर अभिमान करते थे। दोनों को एक राह पर लाने के लिए उन्होंने समाज के भयंकर पतन की दशा का अवलोकन किया तथा उसके अनुकूल उपचार खोजे। उन्होंने सच्चे युग-दृष्टा की भाँति समाज के यथार्थ रूप का दर्शन किया, तत्पश्चात् युगदृष्टा के रूप में नये समाज के निर्माण की ओर पग बढ़ाये। उन्होंने किसी जाति, धर्म, वर्ग आदि का पल्ला नहीं पकड़ा। वे तो समाज का कल्याण चाहते थे। इसलिए उन्होंने जातिवाद, धर्मान्धता, ऊँच, नीच, पाखण्ड आदि का खुलकर विरोध किया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में कबीर ऐसे ही मिलन-बिन्दु पर खड़े थे, जहाँ से एक ओर हिन्दुत्व निकल जाता है और दूसरी

Downloaded From www.icseboard.org

ओर सगुण साधना। उसी प्रशस्त चौराहे पर वे खड़े थे। वे दोनों ओर देख सकते थे और परस्पर विरुद्ध दिशा में गये मार्गों के गुण-दोष उन्हें स्पष्ट दिखाई देते थे।

सन्त कबीर ने स्थान-स्थान पर जाकर पर्याप्त भ्रमण किया था। घुमक्कड़ होने के कारण ही उनकी भाषा में अरबी, फारसी, भोजपुरी, मगही, पंजाबी, राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं के शब्द आ गये हैं। उनकी बोलचाल की अनपढ़ भाषा विविध आंचलिक शब्दों, उक्तियों तथा अपभ्रंश शब्दों से युक्त है। इसलिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इसे सधुक्कड़ी भाषा कहकर पुकारते हैं। वैसे उनकी भाषा किसी प्रकार की हो, परन्तु उन्हें भाषा पर पूर्ण अधिकार था। वे जानते थे कि किस भाव को व्यक्त करने के लिए कौन-सा उपयुक्त शब्द होगा। यही कारण है कि भाषा चुपचाप उसी भाव को प्रकट करने लगती है। इसी ओर संकेत करते हुए **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने लिखा है - ''भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार था। वे वाणी के डिटेक्टर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा, उसे उसी रूप में भाषा से करवा दिया है - बन आया है तो सीधे-सीधे नहीं तो दविश देकर, भाषा कबीर के सामने कुछ लाचार सी नजर आती है। उसमें मानो हिम्मत नहीं है कि इस लापरवाह फक्कड़ को इन्कार कर सके। जैसी ताकत कबीर की भाषा में है। वैसी बहुत कम लेखकों में पाई जाती है। इस प्रकार बोलचाल की चलताऊ तथा विविध भाषाओं के शब्दों से युक्त तथा व्याकरण के बन्धनों से मुक्त भाषा के माध्यम से कबीर ने गम्भीर विषय का अत्यन्त सरल रूप प्रस्तुत किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन सत्य ही है। सच पूछा जाये तो आज तक हिन्दी में ऐसा जबर्दस्त व्यंग्य लेखक पैदा ही नहीं हुआ। उसकी साफ चोट करने वाली भाषा, बिना कहे भी सब कुछ कह देने वाली शैली अत्यन्त सही, किन्तु अत्यन्त तेज प्रकाशन-भंगी अनन्य असाधारण है। **[4x5=20]**

प्र० (i) कबीर के समय समाज की क्या दशा थी ?

(ii) युग दृष्टा का क्या अर्थ है ? समाज की उन्नति और एकता के लिए कबीर ने क्या किया ?

(iii) समन्वय का क्या अर्थ है ? विरोधी परिस्थितियों में समन्वय के क्षेत्र में कबीर का क्या योगदान रहा है ?

(iv) कबीर की भाषा में कौन सी विशेषताएँ पायी जाती हैं ? आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के उनकी भाषा के बारे में क्या विचार हैं ?

(v) कबीर की भाषा को मुक्त भाषा क्यों कहा गया है ?

3. निम्नलिखित मुहावरों को उतारकर उनसे वाक्य बनाएँ :- **[1x5=5]**

(i) साँप सूँघ जाना ।

(ii) हँसी में उड़ाना ।

(iii) मिट्टी पलीद करना ।

(iv) पानी की तरह रूपया बहाना।

4. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कर पुनः लिखिए :- **[1x5=5]**

(i) उसके आगमन ने उत्सव में शोभा बढ़ा दिया ।

Downloaded From www.icsehoard.org

(ii) सूर्यास्त के छिपते ही वातावरण में अँधेरा छा गया।

(iii) अनेक परिक्षार्थी प्रश्न ही नहीं समझ सके।

(iv) वह नपा-तुला शब्द बोलता है।

(v) महात्मा बुद्ध का चिन्तन सरल व स्वाभाविक थे।

हिन्दी साहित्य [12½x4=50]

किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक पुस्तक से एक-एक प्रश्न करना अनिवार्य है।

काव्य मंजरी

1. **'आः धरती कितना देती हैं -**
बचपन में कवि ने पृथ्वी में क्या बोया था और वर्षों के बाद बड़े होकर क्या बोया था ? दोनों स्थितियों का क्या परिणाम हुआ ?

2. **'नदी के द्वीप' -**
'नदी के द्वीप' कविता कवि ने प्रतीकात्मक रूप में लिखी है। इसमें निहित प्रतीकात्मक शब्दावली का विस्तार से वर्णन कीजिए।

3. **'बादल को घिरते देखा है' -**
कवि नागार्जुन ने बादलों के घिरने के परिप्रेक्ष्य में किन दृश्यों का वर्णन किया है ? समझाकर लिखिए।

गद्य संकलन

4. **'सती'**
''नहीं, आपको ऐसी मूर्खता करने का कोई अधिकार नहीं है। यह एक अपराध है, क्या आप यह नहीं जानती?'' इस कथन में कैसी मूर्खता करने की बात की जा रही हैं ? यह मूर्खता कौन करने वाला है ?

5. **'क्या निराश हुआ जाए'**
'क्या निराश हुआ जाए' निबन्ध के माध्यम से निबन्धकार ने किन दो घटनाओं का वर्णन कर हमें आशान्वित रहने की सलाह दी है।

6. **'भक्तिन'**
'भक्तिन' के जीवन के चारों अध्याय का संक्षेप में परिचय देते हुए कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

सारा आकाश

7. **'अम्मा' अथवा 'बाबूजी' का चरित्र चित्रण कीजिए।**

8. **प्रूफ रीडिंग का काम क्या वास्तव में थकाऊ और कष्टदायक था? प्रेस के वातावरण का वर्णन करते हुए बताइए कि वहाँ काम करने वाले लोग कैसे थे ?**

9. **मामाजी और समर के बीच क्या बातें हुई थीं ? मामाजी ने समर क्यों बुलाया था ?**

Downloaded From www.icseboard.org